कहां से सीखते हैं पक्षी गुनगुनाना?

एक नई सामाजिक नेटवर्क टेक्नॉलॉजी ट्विटर से पता लगाया जा सकेगा कि कौन सी सॉन्गबर्ड (गाने वाली चिड़िया) एक-दूसरे के साथ समय बिताती है और वे धुनें कैसे सीखती हैं।

चिड़ियाओं के इस मेल-मिलाप को रिकॉर्ड करने के लिए उन पर एक बिल्ला लगाया जाएगा जो यह जानकारी देगा कि वे कब, कहां और कितनी देर एक-दूसरे के समीप रहती हैं।

वॉशिंगटन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं की योजना है कि अगले वसंत तक शहर के पास के जंगल में गीत गाने वाली गौरैयों पर ऐसे बिल्ले लगा देंगे। उनको लगता है कि अन्य इकॉलॉजिस्ट भी इनका उपयोग करने को आगे आएंगे।

एक-एक ग्राम के ये बिल्ले जॉन बर्ट और उनके साथियों ने विकसित किए हैं। ये सोलर सेल से चलते हैं और उनमें ऊर्जा संग्रहण की क्षमता होती है। ये बिल्ले रेडियो द्वारा बताते रहते हैं कि कब दूसरा बिल्ला पास आया और कितनी देर तक पास रहा। यह डैटा जंगल में स्थापित एक बेस स्टेशन में रिकॉर्ड होता रहता है।

बर्ट और उनके साथी नर सॉन्गबर्ड में पहला बिल्ला लगाने की योजना बना रहे हैं। ये नर पक्षी मादा पक्षियों को अलग-अलग प्रकार की धुनों से रिझाने की कोशिश करते हैं और पड़ोस के इलाके के अन्य नर पक्षियों से भी संवाद करते हैं। युवा नर अपना इलाका स्थापित करने से पहले अपनी ज़िंदगी का पहला साल इन धुनों व गीतों को सीखने और उनकी रियाज़ करने में बिताते हैं। बर्ट बताते हैं कि "वे गीतों को आत्मसात करते हैं लेकिन गाते नहीं हैं।"

युवा नरों में पड़ोसी इलाकों में रहने वाले वयस्कों से गीत सीखने की प्रवृत्ति होती है। वे अपने पड़ोसी इलाके के पक्षियों की धुन गुनगुनाकर आक्रमण का संकेत भी देते हैं और कभी-कभी तनाव कम करने में भी उपयोग करते हैं।

इसका मतलब यह है कि अपने पड़ोसी की सबसे

सफल धुनों को जानना बहुत महत्वपूर्ण है। जो पक्षी इसमें असफल हो जाते हैं, वे आपस में ज़्यादा लड़ाई करते हैं और अपना इलाका छोड़ देते हैं। और इसी के साथ अपना साथी ढूंढने का मौका भी गंवा देते हैं।

लेकिन सही-सही यह अभी तक पता नहीं चल पाया है कि युवा नरों को यह कैसे पता चलता है कि कौन-सी धुनें सीखें। वयस्कों और युवाओं पर बिल्ले लगाएंगे जो यह बता पाएंगे कि ये पक्षी किसके साथ कितना वक्त बिताते हैं और किसका गाना सुन रहे हैं।

इन प्रोटोटाइप बिल्लों की कीमत अभी 400 डॉलर के आस-पास है मगर जल्दी ही कम हो जाएगी। बर्ट को अपने प्रोजेक्ट के लिए कम से कम सौ के करीब बिल्लों की ज़रूरत होगी।

वे कहते हैं कि "हर कोई मेरी तरह चिड़ियाओं के इस तरह के व्यवहारों को जानना चाहता है।" इस तरह की प्रक्रिया चलाने के लिए दूसरी सहायक तकनीकों की भी ज़रूरत होगी, जैसे ऑडियो रिकॉर्डर, त्वरण मापी या जीपीएस यूनिट। वे इसे माड्यूलर बनाना चाहते हैं ताकि हर शोधकर्ता अपने हिसाब से इसके अलग-अलग घटकों में परिवर्तन कर सके। बिल्लों का उपयोग अन्य जंतुओं पर सामाजिक व्यवहार शोध के लिए भी किया जा सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***